प्रारंभिक परीक्षा

क्यूएस रैंकिंग 2026

संदर्भ

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 जारी हो गई है, जिसमें भारतीय संस्थानों में उल्लेखनीय सुधार और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि देखी गई है।

क्यूएस रैंकिंग के बारे में -

- विश्वविद्यालयों की वार्षिक वैश्विक रैंकिंग जो निम्नलिखित का मूल्यांकन करती है:
  - अकादमिक प्रदर्शन
  - रोजगार
  - स्थिरता
  - वैश्विक प्रभाव
- **लॉन्च किया गया: क्वाक्वेरेली साइमंड्स (QS), एक यूके-आधारित वैश्विक शिक्षा सेवा फर्म द्वारा।**
- **उद्देश्य:**
  - वैश्विक विश्वविद्यालय की स्थिति के बारे में पारदर्शी जानकारी प्रदान करना।
  - अनेक प्रदर्शन संकेतकों का उपयोग करके विश्वविद्यालयों का चयन करने में छात्रों का मार्गदर्शन करना।
  - विश्वविद्यालयों को अनुसंधान, शिक्षण, अंतर्राष्ट्रीयकरण और प्रभाव में सुधार के लिए प्रेरित करना।

क्यूएस रैंकिंग 2026 में भारत का प्रदर्शन -

- **क्यूएस रैंकिंग 2026 में 54 भारतीय विश्वविद्यालय शामिल।**
- **चौथा सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाला देश**:
  - संयुक्त राज्य अमेरिका (192 विश्वविद्यालय)
  - यूनाइटेड किंगडम (90 विश्वविद्यालय)
  - मुख्यभूमि चीन (72 विश्वविद्यालय)
- पहली बार 8 भारतीय विश्वविद्यालयों ने रैंकिंग में प्रवेश किया - जो इस वर्ष किसी भी देश से नए प्रवेशकों की सबसे अधिक संख्या है।
- **क्यूएस रैंकिंग में भारतीय विश्वविद्यालयों की संख्या 2015 में 11 से बढ़कर 2026 में 54 हो गई है - जो कि मात्र एक दशक में पांच गुना वृद्धि है।**
- भारत के 48% विश्वविद्यालयों ने पिछले वर्ष की तुलना में अपनी स्थिति में सुधार किया।

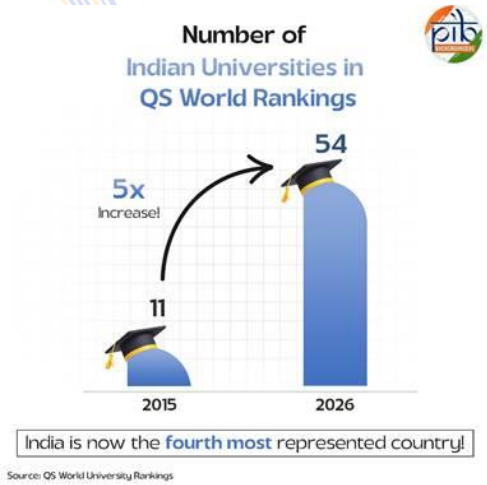

- **शीर्ष रैंक वाले भारतीय संस्थान:**
  - **वैश्विक शीर्ष 250 में 6 भारतीय संस्थान शामिल हैं।**
- **IIT दिल्ली को वैश्विक स्तर पर 123वां स्थान प्राप्त हुआ है, जो 2025 में इसके 150वें स्थान से बेहतर है।**
- आईआईटी मद्रास ने उल्लेखनीय छलांग लगाई है - 47 पायदान ऊपर चढ़कर, 227 (2025) से 180 (2026) पर पहुंच गया है।

स्रोत: TheHindu

NB.1.8.1 वैरिएंट

संदर्भ

WHO तेजी से फैलने वाले और गले में गंभीर खराश के मामलों के लिए NB.1.8.1 (निम्बस) की निगरानी कर रहा है।

समाचार के संदर्भ में और अधिक जानकारी -

- भारत में अभी तक कोई पुष्ट मामला नहीं है।
- सब-वेरिएंट XFG (स्ट्रेटस) भी उभर रहा है।

NB.1.8.1 (निम्बस) के बारे में -

- **वैरिएंट नाम:** NB.1.8.1 (निम्बस)
- **वंश:** ओमिक्रॉन का उपवर्ग
- **पहली बार पता चला:** जनवरी 2025
- **मुख्य लक्षण:** अत्यंत दर्दनाक गले में खराश ("**रेज़र ब्लेड थ्रोट**")
- **व्यापकता:** वैश्विक अनुक्रमित मामलों का 10.7% हिस्सा।
- **लक्षण (ओमिक्रॉन जैसे):** खांसी, बुखार, थकान, सिरदर्द, नाक बंद होना, मांसपेशियों में दर्द, मतली, स्वाद/गंध की कमी, और कुछ में गले में गंभीर दर्द।
- **"रेज़र ब्लेड थ्रोट" क्या है?**
    - **यह कोई चिकित्सा शब्द नहीं है - इसका उपयोग तीव्र, गले में दर्द का वर्णन करने के लिए किया जाता है**
    - ऐसा लगता है जैसे कांच के टुकड़े निगल रहे हों
    - कुछ वायरल और बैक्टीरियल संक्रमणों में देखा जाता है
- **क्या निम्बस खतरनाक है?**
    - **डब्ल्यूएचओ जोखिम:** कम
    - हल्की से मध्यम बीमारी
    - अस्पताल में भर्ती होने या मृत्यु दर में कोई बड़ी वृद्धि नहीं
    - टीके अभी भी प्रभावी
- **अन्य प्रकार – XFG (स्ट्रैटस):**
    - तेजी से फैलने वाला ओमिक्रॉन सब-वैरिएंट
    - डब्ल्यूएचओ की निगरानी में नहीं
    - निम्बस से कम मामले

स्रोत: TheHindu

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (ETI), 2025

संदर्भ

हाल ही में विश्व आर्थिक मंच द्वारा ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (ETI) जारी किया गया।

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (ETI)-2025

- **उद्देश्य:** राष्ट्रीय ऊर्जा प्रणालियों का आकलन करना और 118 देशों में ऊर्जा परिवर्तन में प्रगति पर नज़र रखना
- **अंतिम स्कोर:** दो उप-सूचकांकों का संयोजन:
  - **सिस्टम प्रदर्शन (60%)** – समानता, सुरक्षा और स्थिरता को मापता है
  - **संक्रमण तत्परता (40%)** – इसमें शामिल हैं:
    - **मुख्य समर्थक:** विनियमन, राजनीतिक प्रतिबद्धता, वित्त और निवेश
    - **सक्षम कारक:** नवाचार, बुनियादी ढांचा, शिक्षा और मानव पूंजी
- **शीर्ष 5 देश:**
  - स्वीडन
  - फिनलैंड
  - डेनमार्क
  - नॉर्वे
  - स्विट्ज़रलैंड
- **अन्य प्रमुख रैंकिंग:**
  - **चीन:** 12वां स्थान
  - **संयुक्त राज्य अमेरिका:** 17वां स्थान
  - **पाकिस्तान:** 101वां स्थान
  - **कांगो:** निम्नतम स्थान पर
- **भारत का प्रदर्शन:** 71वां स्थान
- **प्रगति के क्षेत्र:**
  - ऊर्जा पहुंच का विस्तार करना
  - ऊर्जा तीव्रता को कम करना
  - मीथेन (CH_4) उत्सर्जन कम करना
  - ऊर्जा विनियमन में सुधार
  - स्वच्छ ऊर्जा निवेश को आकर्षित करना

स्रोत: TheWire

चरम हीलियम (EHe) तारे

संदर्भ

शोधकर्ताओं ने तारे **A980** में एक दुर्लभ ब्रह्मांडीय घटना की खोज की है। यह तारा एक **चरम हीलियम (Extreme Helium - EHe) तारा** है, जिसमें **जर्मेनियम** नामक धातु तत्व की **असामान्य रूप से अधिक मात्रा** पाई गई है जो कि इस प्रकार के तारों में पहले कभी नहीं देखी गई थी।

चरम हीलियम तारा (EHe तारा) के बारे में -

- **परिभाषा:** एक दुर्लभ, कम द्रव्यमान वाला महादानव(supergiant) तारा जिसमें हाइड्रोजन लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित है।
- **संरचना:** मुख्य रूप से हीलियम से बना है (**सामान्य तारों के विपरीत जो हाइड्रोजन से समृद्ध होते हैं**)।
- **उत्पत्ति:** ऐसा माना जाता है कि ये तारे एक **कार्बन-ऑक्सीजन श्वेत बौने तारे** और एक **कम द्रव्यमान वाले हीलियम श्वेत बौने तारे** के विलयन (**merger**) से बनते हैं।
- **दुर्लभता:** हमारी आकाशगंगा में अब तक केवल **21 ऐसे तारों की पहचान की गई है**
- **तापमान सीमा:** प्रभावी सतह तापमान **8,000-35,000K के बीच होता है**
- **खोज:** पहला EHe तारा, **HD 124448**, **1942 में मैकडोनाल्ड वेधशाला** में **डैनियल एम. पॉपर** द्वारा खोजा गया था।

जर्मेनियम के बारे में -

- **तत्व का नाम:** जर्मेनियम (प्रतीक: **Ge**, परमाणु क्रमांक: **32**)
- **समूह:** आवर्त सारणी के **समूह 14 (IVa)** में, **सिलिकॉन** और **टिन के बीच स्थित है**
- **स्वरूप:** चांदी-ग्रे रंग का उपधातु, धातुओं और अधातुओं के मध्यवर्ती गुणों के साथ
- **संरचना:** हीरे जैसी क्रिस्टलीय संरचना, रासायनिक रूप से सिलिकॉन के समान
- **स्थिरता:** हवा और पानी में स्थिर; नाइट्रिक एसिड को छोड़कर अधिकांश एसिड और क्षार से अप्रभावित
- **चीन: विश्व का लगभग 60% जर्मेनियम उत्पादित करता है**
- **अन्य:** कनाडा, फिनलैंड, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका शेष उत्पादन में योगदान देते हैं।

स्रोत: **PIB**

रैपामाइसिन(Rapamycin)

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने जीवनकाल बढ़ाने का एक संभावित तरीका खोजा है, जिसमें **रैपामाइसिन** और **मेटफॉर्मिन** जैसी दो मौजूदा दवाओं का उपयोग किया गया है। ये दवाएं कैलोरी प्रतिबंध (calorie restriction) की तरह कार्य करती हैं। हालांकि, मानव पर परीक्षण अभी शुरू नहीं हुए हैं।

रैपामाइसिन के बारे में -

- **रैपामाइसिन (सिरोलिमस) एक FDA-अनुमोदित दवा है जो mTOR (मैकेनिस्टिक टारगेट ऑफ रैपामाइसिन) मार्ग को बाधित करने के लिए जानी जाती है।**
- **क्रियाविधि**: कोशिका वृद्धि को दबाता है**,** ऑटोफैगी को बढ़ावा देता है**,** उम्र बढ़ने में देरी करता है।
- **जीवनकाल पर प्रभाव (पशु मॉडल):**
  - चूहों में जीवनकाल को 20-60% तक बढ़ाता है, भले ही इसे जीवन में देर से शुरू किया गया हो (उदाहरण के लिए, मध्यम आयु वर्ग के चूहों में 3 महीने या 6 सप्ताह का उपचार)।
  - जीवनकाल में वृद्धि सभी प्रजातियों में देखी जाती है: खमीर, कीड़े, मक्खियाँ, चूहे।
- **जीवनकाल विस्तार का तरीका:**
  - यह मुख्य रूप से कैंसर के विकास (नियोप्लास्टिक रोग) को विलंबित करता है, लेकिन एमटीओआर अवरोध के माध्यम से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को भी धीमा करता है।
- **हेल्थस्पैन के लाभ:**
  - मांसपेशियों की ताकत, मोटर समन्वय, संज्ञानात्मक प्रदर्शन में सुधार करता है, और कृन्तकों में उम्र से संबंधित शिथिलता को कम करता है।
- **उपचार व्यवस्था:**
  - दीर्घकालिक और आंतरायिक खुराक दोनों ही प्रभावी हैं; अल्पावधि मध्य-आयु उपचार से आजीवन उपयोग के समान प्रभाव प्राप्त हो सकते हैं।
- **रूपांतरण संबंधी संभावनाएँ:**
  - प्रीक्लिनिकल डेटा जीवनकाल और स्वास्थ्य अवधि में वृद्धि दर्शाता है; वृद्धों में मानव परीक्षण सीमित हैं और सुरक्षा, प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया और बायोमार्करों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- **चेतावनियाँ एवं चिंताएँ:**
  - प्रतिरक्षादमनकारी होने के कारण इसके जोखिमों में संक्रमण की संवेदनशीलता, मुंह के छाले, हाइपरलिपिडिमिया, इंसुलिन प्रतिरोध शामिल हैं।
  - इष्टतम खुराक और समय (विशेषकर दुष्प्रभावों को न्यूनतम करने के लिए) अभी भी जांच के अधीन है।

स्रोत: **IndianExpress**

अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO)

संदर्भ

CLIVAR प्रशांत क्षेत्र पैनल कार्य समूह के वैज्ञानिकों ने **ENSO** को समझने और भविष्यवाणी करने के लिए एक बेहतर मॉडल का प्रस्ताव दिया है, जिसे रिचार्ज ऑसिलेटर (**RO**) मॉडल कहा जाता है।

RO मॉडल के बारे में -

- RO मॉडल दो प्रमुख चरों पर ध्यान केंद्रित करके ENSO गतिशीलता को सरल बनाता है :
  - मध्य-पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सतह का तापमान (एसएसटी)।
  - पश्चिमी प्रशांत महासागर में भूमिगत गर्म जल की मात्रा।
- यह मॉडल संकेत करता है कि **ENSO** इन दो कारकों के बीच **एक झूले (see-saw)** की तरह काम करता है — जैसे ही **गर्म पानी पश्चिमी प्रशांत में "रिचार्ज" या एकत्रित होता है**, यह भविष्य में **अल नीनो** की स्थिति के लिए परिस्थितियाँ तैयार करता है, और इसके विपरीत स्थिति में **ला नीना** उत्पन्न होती है।
- यह दृष्टिकोण अधिक जटिल वायुमंडलीय अंतःक्रियाओं के बजाय महासागरीय ऊष्मा के भौतिक निर्माण और उत्सर्जन चक्रों पर ध्यान केंद्रित करके पूर्वानुमानशीलता में सुधार कर सकता है।

अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO) के बारे में -

- **ENSO एक आवर्ती जलवायु पैटर्न है जिसमें मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के पानी के तापमान में परिवर्तन शामिल है।**
- लगभग **तीन से सात वर्षों की अवधि में,** उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के एक बड़े हिस्से में सतही जल **सामान्य की तुलना में 1°C से 3°C तक गर्म या ठंडा हो जाता है।**
- **यह दोलनशील गर्म होने और ठंडा होने का पैटर्न, जिसे ENSO चक्र कहा जाता है,** उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वर्षा वितरण को सीधे प्रभावित करता है और दुनिया भर के मौसम पर इसका गहरा प्रभाव हो सकता है।
- **ENSO के तीन चरण हैं: अल नीनो, ला नीना और तटस्थ,** जो विभिन्न तापमान और वायुमंडलीय स्थितियों से जुड़े हैं।
  - **अल नीनो तब घटित होता है जब पूर्वी प्रशांत महासागर में सतही जल का तापमान सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है,** और यह गर्मी कई महीनों से लेकर कुछ वर्षों तक बनी रह सकती है।
  - **ला नीना तब घटित होता है जब पूर्वी प्रशांत महासागर में सतह के पानी का तापमान सामान्य से अधिक ठंडा हो जाता है,** और यह शीतलन कई महीनों से लेकर कुछ वर्षों तक भी बनी रह सकती है।
  - **तटस्थ स्थितियाँ** तब उत्पन्न होती हैं जब पूर्वी प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान औसत के करीब होता है, तथा इसमें **कोई महत्वपूर्ण गर्माहट या ठंडक नहीं होती।**

अल नीनो और ला नीना के बीच अंतर

अल नीनो बनाम ला नीना

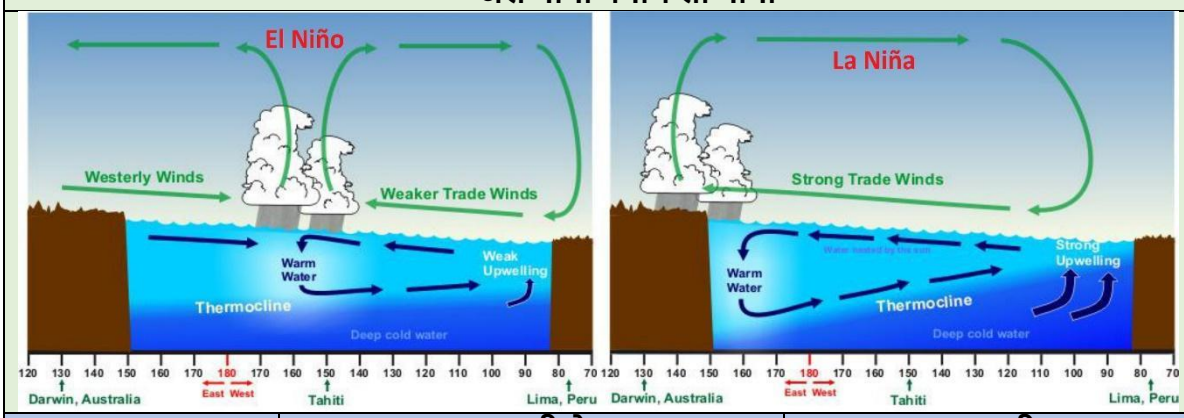

तुलना का आधार	अल नीनो	ला नीना

अर्थ	**अल नीनो** का मतलब स्पेनिश में छोटा बालक या क्राइस्ट चाइल्ड होता है।	ला नीना का स्पेनिश में अर्थ छोटी लड़की है।
समुद्र सतह का तापमान	यह **औसत से अधिक समुद्री सतह के तापमान को दर्शाता है** जो समय-समय पर पूर्व-मध्य भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में विकसित होता रहता है।	यह पूर्व-मध्य भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में **समुद्र की सतह के तापमान में आवधिक शीतलन को दर्शाता है।**
दबाव	**यह पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में उच्च वायु सतही दबाव से ग्रस्त है।**	पूर्वी प्रशांत महासागर में निम्न वायु सतही दबाव शामिल है
तंत्र	**अल नीनो के दौरान व्यापारिक हवाएँ कमज़ोर हो जाती हैं।** गर्म पानी को पूर्व की ओर, अमेरिका के पश्चिमी तट की ओर धकेल दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप **वॉकर सेल कमज़ोर हो जाता है।**	ला नीना घटनाओं के दौरान, **व्यापारिक हवाएं सामान्य से भी अधिक तेज होती हैं**, जो अधिक गर्म पानी को एशिया की ओर धकेलती हैं, जिसके परिणामस्वरूप **वॉकर सेल अधिक मजबूत** हो जाता है।
घटना की अवधि	यह आमतौर पर हर **3-5 साल में होता है और 9-12 महीने तक रहता है।**	आमतौर पर यह **हर 3-5 साल में होता है और 1-3 साल तक रहता है।**
प्रभाव डालता है	• पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में सूखा • पश्चिमी दक्षिण अमेरिका में बाढ़ • दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर कमजोर उथल-पुथल।	• पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में अत्यधिक वर्षा • दक्षिण अमेरिका में सूखे की स्थिति • दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर तीव्र उथल-पुथल।
भारतीय मानसून पर प्रभाव	**मानसून पर इतना बुरा असर पड़ता है कि बारिश में 70% की कमी आने की आशंका होती है।** अल नीनो के दौरान हवाएं नमी को भारतीय भूभाग की ओर नहीं ले जाती हैं, जिससे बारिश में कमी आती है।	ला नीना के कारण हिंद महासागर और सोमालिया के तट पर उच्च तापमान होता है तथा **भारत में तुलनात्मक रूप से बेहतर मानसूनी वर्षा होती है।**

स्रोत: [The Hindu]

यदि ईरान परमाणु अप्रसार संधि से हटने का निर्णय लेता है तो क्या होगा?

संदर्भ

ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते सैन्य तनाव के बीच, ईरान ने कहा कि उसकी संसद परमाणु अप्रसार संधि (**NPT**) से संभावित रूप से बाहर निकलने के लिए एक विधेयक तैयार कर रही है।

परमाणु अप्रसार संधि के बारे में -

- **1968 में हस्ताक्षरित और 1970 से लागू** NPT एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसका उद्देश्य है:
  - परमाणु हथियारों और प्रौद्योगिकी के प्रसार को रोकना।
  - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना।
  - वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में कार्य करना।
- **प्रमुख प्रावधान:**
  - केवल **पांच देशों को परमाणु हथियार संपन्न राज्यों (NWS) के रूप में मान्यता प्राप्त है: संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन - जिन्हें 1 जनवरी 1967** से पहले परमाणु हथियारों का परीक्षण करने वाले देशों के रूप में परिभाषित किया गया है।
  - **गैर-परमाणु-हथियार संपन्न राज्य(NNWS) परमाणु हथियार न बनाने की प्रतिबद्धता जताते हैं।**
  - NNWS को आईएईए सुरक्षा उपायों के तहत शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु प्रौद्योगिकी तक पहुंच का अधिकार है।
- **आज 191 देश इस संधि के पक्षकार हैं। ईरान 1970 से इस संधि पर हस्ताक्षरकर्ता है।**
  - **हालाँकि, भारत, पाकिस्तान और इज़राइल ने कभी इस पर हस्ताक्षर नहीं किए। उत्तर कोरिया ने 1985 में इस पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन 2003 में इससे पीछे हट गया।**

परमाणु अप्रसार संधि (NPT) का अनुच्छेद 10 - वापसी खंड

- **संधि से हटने का अधिकार:** किसी भी राज्य पक्ष को संधि से हटने का अधिकार है यदि वह निर्णय लेता है कि संधि के विषय से संबंधित असाधारण घटनाओं ने उसके सर्वोच्च हितों को खतरे में डाल दिया है।
- **नोटिस की आवश्यकता:** हटने वाले राज्य को अन्य सभी पक्षों और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) को 3 महीने पहले नोटिस देना होगा।
- **आवश्यक औचित्य:** वापसी नोटिस में उन असाधारण घटनाओं का विवरण शामिल होना चाहिए जिनके बारे में राज्य का मानना है कि उन्होंने उसके सर्वोच्च हितों को खतरे में डाला है।

ईरान के NPT से बाहर निकलने पर परिणाम -

- **आईएईए की निगरानी समाप्त:** ईरान अब अपने परमाणु संयंत्रों के आईएईए निरीक्षण की अनुमति देने के लिए कानूनी रूप से बाध्य नहीं होगा।
  - औसतन 1.4 दैनिक निरीक्षण (2023 तक) बंद हो जाएंगे, जिससे अस्पष्टता बढ़ जाएगी।
- **क्षेत्रीय तनाव में वृद्धि:** ईरान के हटने से मध्य पूर्व में परमाणु हथियारों की होड़ की आशंका बढ़ सकती है, विशेष रूप से सऊदी अरब और इजरायल जैसे क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वियों के बीच।
- **वैश्विक अप्रसार व्यवस्था को कमजोर करना:** ईरान के बाहर निकलने से NPT की विश्वसनीयता कमजोर हो सकती है और अन्य राज्यों के लिए वापसी पर विचार करने का एक उदाहरण स्थापित हो सकता है, जिससे वैश्विक परमाणु व्यवस्था अस्थिर हो सकती है।
- **शस्त्रीकरण की संभावना:** यद्यपि ईरान ने परमाणु हथियार विकसित करने का कोई इरादा नहीं जताया है, फिर भी NPT से बाहर निकलने से उसे अंतर्राष्ट्रीय कानूनी बाधाओं के बिना उनका विकास करने की अनुमति मिल सकती है।
- **भू-राजनीतिक परिणाम:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की संभावित कार्रवाई, नए प्रतिबंध, तथा प्रतिद्वंद्वी देशों की ओर से संभावित पूर्व-आक्रमण या साइबर ऑपरेशन।

  - इससे ईरान कूटनीतिक और आर्थिक रूप से और अलग-थलग पड़ सकता है।
- **शांतिपूर्ण परमाणु सहयोग की हानि:** इससे हटने से शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी और आर्थिक सहायता समाप्त हो जाएगी।

स्रोत: **Indian Express**

विकास के लिए वित्तपोषण पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देश विकास के लिए वित्तपोषण पर चौथे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन(FFD4) के परिणाम दस्तावेज पर सहमति पर पहुंच गए हैं, जिसे स्पेन के सेविला में आगामी शिखर सम्मेलन में औपचारिक रूप से अपनाया जाएगा।

समाचार के संदर्भ में और अधिक जानकारी -

- यह सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के वित्तपोषण के लिए एक नए वैश्विक ढांचे की नींव के रूप में कार्य करता है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका ने FFD4 प्रक्रिया से पूरी तरह से बाहर होने का विकल्प चुना।

FFD4 परिणाम दस्तावेज़ के मुख्य आयाम -

- **वैश्विक वित्तपोषण ढांचा:** सतत विकास के लिए वित्तपोषण जुटाने के लिए पूर्व FFD सम्मेलनों के तहत की गई प्रतिबद्धताओं की पुष्टि करता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना सुधार:** समावेशी शासन सुधारों का आग्रह:
    - आईएमएफ कोटा पुनर्संरेखण
    - विश्व बैंक की शेयरधारिता समीक्षा
- **ऋण स्थिरता:** संयुक्त राष्ट्र जिम्मेदार संप्रभु ऋण प्रबंधन के लिए स्वैच्छिक सिद्धांतों का प्रस्ताव करने हेतु एक गठबंधन (आईएमएफ और विश्व बैंक के साथ) का नेतृत्व करेगा।
- **कर सुधार:** आधार क्षरण और लाभ स्थानांतरण (बीईपीएस) पर ओईसीडी/जी20 समावेशी ढांचे के अंतर्गत स्तंभ II के कार्यान्वयन को मान्यता दी गई।
    - जोर देता है:
        - सभी अधिकार क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए न्यूनतम वैश्विक कॉर्पोरेट कर।
        - कार्यान्वयन हेतु देश-विशिष्ट तकनीकी सहायता:
            - ग्लोबल एंटी-बेस इरोजन (ग्लोबीई) मॉडल नियम
            - कर नियम के अधीन (एसटीटीआर)
- **सतत् विकास लक्ष्य वित्तपोषण अंतर को कम करना:** विकासशील देशों में सतत् विकास लक्ष्य वित्तपोषण में 4 ट्रिलियन डॉलर की वार्षिक कमी को कम करने का लक्ष्य।

FFD प्रक्रिया के बारे में -

- **एक पहल जो पहले हुए तीन सम्मेलनों के परिणामों पर आधारित है:**
  - **मॉन्टेरी सर्वसम्मति (2002):** विकास वित्तपोषण पर पहला वैश्विक समझौता।
    - आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) बढ़ाने पर जोर दिया गया।
    - संदर्भ देते हुए सहायता प्रभावशीलता पर बल दिया गया।
    - आईएमएफ प्रशासन में सुधार का आह्वान किया गया तथा नवीन वित्तपोषण विधियों को बढ़ावा दिया गया।
  - **दोहा घोषणा (2008):** मॉन्टेरी की प्रतिबद्धताओं की पुनः पुष्टि की गई, विशेष रूप से 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान।
    - लिंग-संवेदनशील वित्तपोषण जैसे पहलुओं को प्रस्तुत किया गया।
    - हरित जलवायु कोष के लिए समर्थन सहित जलवायु वित्त पर अधिक जोर दिया गया।
  - **अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा (2015):** सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के साथ निकटता से संरेखित।
    - एकीकृत राष्ट्रीय वित्तपोषण रूपरेखा (INFF) की शुरुआत की गई।
      - INFFs देश-प्रधान और देश-स्वामित्व वाले उपकरण हैं।
      - सरकारों को योजना बनाने, क्रियान्वयन करने और सतत विकास प्राथमिकताओं के साथ वित्तपोषण संरेखित करने में सहायता करना।

स्रोत: **UN News**

संपादकीय सारांश

यू.के.-भारत सांस्कृतिक संबंधों में नई ऊर्जा का संचार

संदर्भ

मई 2024 में, भारत और यूके ने दो ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल कीं - एक लंबे समय से प्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौता और एक सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम, जो गहन सांस्कृतिक और आर्थिक जुड़ाव के एक नए चरण को चिह्नित करता है।

क्या हैं घटनाक्रम?

- **मुक्त व्यापार समझौते (FTA) की पुष्टि:** दोनों देशों ने एफटीए की पुष्टि की, जिससे द्विपक्षीय व्यापार बढ़ा और रचनात्मक अर्थव्यवस्था सहित नए क्षेत्र खुले।
    - यह गहन निवेश और लोगों के बीच आपसी संबंधों के लिए मंच तैयार करता है।
- **सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम (POCC) पर हस्ताक्षर:** 2 मई, 2024 को यूके की संस्कृति सचिव लिसा नंदी और भारत के संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा हस्ताक्षर किए गए।
    - यह दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को मजबूत करने के लिए एक औपचारिक रोडमैप है।
- **POCC के अंतर्गत पांच फोकस क्षेत्र:**
    - **संस्कृति के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियां:** विरासत और कला को साझा करने के लिए एआई, एआर/वीआर का उपयोग करना।
    - **प्रदर्शनियाँ और संग्रह:** संग्रहालयों और दीर्घाओं के बीच सहयोग।
    - **प्रदर्शन और कार्यक्रम:** संयुक्त सांस्कृतिक उत्सव, रंगमंच और संगीत।
    - **सांस्कृतिक संपत्ति:** विरासत संरक्षण और जिम्मेदार सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
    - **स्थिरता:** पर्यावरण अनुकूल सांस्कृतिक प्रथाओं और कारीगरी को समर्थन देना।
- **वेव्स शिखर सम्मेलन में उच्च स्तरीय सहभागिता**:
    - सर्वोच्च अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधि लिसा नंदी ने मुंबई में विश्व ऑडियो विजुअल और मनोरंजन शिखर सम्मेलन में भाग लिया।
    - उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किस प्रकार भारत-ब्रिटेन सहयोग वैश्विक रचनात्मक उद्योगों में बदलाव ला सकता है।
- **ब्रिटिश संस्थानों के साथ साझेदारी:** ब्रिटिश लाइब्रेरी, ब्रिटिश म्यूजियम, नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम और अन्य भारतीय समकक्षों के साथ डिजिटल और क्यूरेटोरियल साझेदारी की संभावनाएं तलाश रहे हैं।
    - ब्रिटेन के 1,700 से अधिक संग्रहालय द्विपक्षीय सहयोग की व्यापक संभावनाएं प्रदान करते हैं।
- **सांस्कृतिक संरक्षण में कॉर्पोरेट भागीदारी**
    - **उदाहरण**: रॉयल एनफील्ड और यूनेस्को की हिमालयन नॉट परियोजना हिमालयी वस्त्र परंपराओं को संरक्षित करती है और 580 से अधिक कारीगरों को समर्थन देती है।
    - व्यवसाय-आधारित कहानी-कथन सांस्कृतिक सहभागिता के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभर रहा है।

इसका महत्व क्या है?

- **रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूत करना:** वैश्विक रचनात्मक क्षेत्र द्वारा 2030 तक वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 10% का योगदान करने का अनुमान है।
    - भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था का मूल्य 35 बिलियन डॉलर है, जो 8% कार्यबल को रोजगार देती है, जो कृषि के बाद दूसरे स्थान पर है।
- **भारत-ब्रिटेन सांस्कृतिक संबंधों में प्रगाढ़ता:** व्यापार और राजनीति से आगे बढ़कर साझा मूल्यों, परंपराओं और रचनात्मकता की ओर बढ़ना।

  - "वेल्स इन इंडिया" जैसे कार्यक्रम, जो 2024 हॉर्नबिल महोत्सव में आकर पूर्ण हुए, दीर्घकालिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।
- **गैर-मेट्रो रचनात्मक केन्द्रों को सशक्त बनाना:** एडीबी के अनुसार, भारत के शीर्ष 10 रचनात्मक केन्द्रों में से 6 (जैसे, बडगाम, तिरुप्पुर) गैर-मेट्रो शहरों में हैं।
  - सांस्कृतिक सहयोग इन क्षेत्रों के लिए दृश्यता और समर्थन सुनिश्चित करता है।
- **युवा क्षमता का दोहन:** 300 से अधिक विश्वविद्यालयों और 3,000 कॉलेजों द्वारा कला/डिजाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जाने के साथ, भारत एक वैश्विक रचनात्मक कार्यबल तैयार कर रहा है।
  - POCC उन्हें वैश्विक अनुभव और कौशल प्रदान कर सकता है।
- **प्रौद्योगिकी-संचालित संस्कृति:** एआई, एआर/वीआर और गेमिंग संस्कृति के उत्पादन और उपभोग के तरीके को नया आकार दे रहे हैं।
  - भारत की शिक्षा और रचनात्मक उद्योगों में एकीकरण भविष्य की प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए महत्वपूर्ण है।

आगे की राह क्या है?

- **रचनात्मक शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश करना:** रचनात्मक क्षेत्रों में युवाओं के लिए कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण की स्थापना करना।
  - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से सर्वोत्तम प्रथाओं और वैश्विक मानकों को अपनाया जा सकता है।
- **उभरती प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करना:** सांस्कृतिक शिक्षा और प्रदर्शनियों में एआई, एआर/वीआर, इमर्सिव तकनीक को शामिल करना।
  - संग्रहालयों और संस्थाओं को डिजिटल रूप से संग्रहित करने और वैश्विक स्तर पर अनुभवों को साझा करने में सक्षम बनाना।
- **समावेशी और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना:** गैर-मेट्रो और जनजातीय रचनात्मक केंद्रों को समर्थन सुनिश्चित करना।
  - स्थानीय कारीगरों को वैश्विक बाज़ारों तक पहुंच बनाने के लिए वित्तपोषण और बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराना।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना:** रॉयल एनफील्ड जैसी कंपनियों को सांस्कृतिक स्थिरता परियोजनाओं का नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित करना।
  - विरासत और रचनात्मक अर्थव्यवस्था उपक्रमों के लिए सीएसआर निधि को प्रोत्साहित करना।
- **त्रिपक्षीय सहयोग को मजबूत करना:** सरकारों, शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों को संयुक्त रूप से नीतियों और कार्यक्रमों का डिजाइन तैयार करना चाहिए।
  - बहुपक्षीय मंचों (जैसे, जी-20) को रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर चर्चा को संस्थागत बनाना चाहिए।
- **सांस्कृतिक कूटनीति को संस्थागत बनाना:** अन्य साझेदार देशों के साथ POCC मॉडल का विस्तार करना।
  - दीर्घकालिक विनिमय कार्यक्रम, सह-निर्माण, कलाकार निवास और शैक्षणिक साझेदारी स्थापित करना।

स्रोत: The Hindu